<u>शोध-प्रारूप</u>

खोरठा काव्य में प्रकृति चित्रण: एक अध्ययन

पीच॰डी॰ उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप की रूपरेखा
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
राँची विश्वविद्यालय, राँची

2024

<u>शोध निर्देशक</u>

डॉ॰ अजीत मुण्डा
सहायक प्राध्यापक
मुण्डारी विभाग,
रामलखन सिंह यादव महाविद्यालय, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

<u>शोधार्थी</u>

बबलू कुमार महतो
यू॰जी॰सी॰ नेट/जे॰आर॰फ॰
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

खोरठा काव्य में प्रकृति चित्रण: एक अध्ययन

प्रस्तावना:

झारखण्ड राज्य भारत के उन अनोखे राज्यों में से एक है जहाँ भाषाओं में विविधता की विरासत झलकती है। झारखण्ड एक जनजातीय बहुल राज्य है। राज्य में मुख्यतः नौ प्रकार की जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाएँ बोली जाती हैं इनके प्रभाव से राज्य में राष्ट्रीय एवं राज्यस्तरीय साहित्य का विकास हुआ है। झारखण्ड क्षेत्र की भाषाएँ एवं बोलियों को मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया गया है प्रथम भाग में जनजातीय भाषाएँ आती है जिसके अंतर्गत-संथाली, कुँडुख, मुंडारी, हो तथा खड़िया भाषाएँ हैं तथा द्वितीय भाग में क्षेत्रीय भाषा आती हैं जिसके अंतर्गत खोरठा, कुरमाली, नागपुरी एवं पंचपरगनिया भाषाएँ है। इन सभी भाषाओं का अध्ययन एवं अध्यापन कार्य झारखण्ड के विभिन्न विश्वविद्यालयों में हो रहे हैं।

खोरठा झारखण्ड की एक स्वतंत्र एवं समृद्ध भाषा है यह भाषा झारखण्ड में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखती है। खोरठा भाषा एवं साहित्य का विकास होता चला आ रहा है जो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है। खोरठा भाषा एवं साहित्य को विकसित एवं सुशोभित करने में खोरठा साहित्यकारों का बहुमूल्य योगदान रहा है। साहित्य के विविध विधाओं यथा - गद्य एवं पद्य के अंतर्गत समाहित कहानी, उपन्यास, नाटक, संस्मरण शब्दचित्र, लघुकथा कविता तथा गीत आदि खोरठा भाषा में लिखे गए हैं। खोरठा लोक साहित्य न सिर्फ खोरठा क्षेत्र अपितु समस्त झारखण्ड क्षेत्र का अक्षय भण्डार है। खोरठा साहित्य खोरठा भाषा क्षेत्र के समाज के लिये दर्पणरूपी कार्य करती है।

खोरठा भाषा के उत्पत्ति के संबंध में जानकारी प्राप्त कर पाना जटिल कार्य है। भाषा उत्पत्ति के संबंध में धातु सिद्धांत, दैवीय सिद्धांत, अनुकरणात्मक सिद्धांत,

सम्पर्क सिद्धांत एवं विकासवादी सिद्धांत को माना गया है। इसमें सर्वाधिक सुयोग्य एवं सटीक विकासवादी सिद्धांत को माना गया है। खोरठा भाषा के भाषा वैज्ञानिकों एवं विद्वानों की मत भाषा उत्पत्ति के संबंध में एकरूपता नहीं पाई जाती इसलिए इसकी सर्वमान्य लिपि 'देवनागरी' है। आज से लगभग 50 वर्ष पूर्व खोरठा भाषा की जो छवि अंधकारमय के रूप में थी आज एक विकसित भाषा के रूप में अग्रसर होती जा रही है।

वर्तमान में खोरठा भाषा की आधुनिक साहित्य समृद्धशाली बन चुकी है। जनवरी 1957 ई० में श्रीनिवास पानुरी के संपादन में खोरठा की पहली मासिक पत्रिका मातृभाषा का प्रकाशन धनबाद से हुआ था। 1957 ई० में आकाशवाणी केन्द्र राँची की स्थापना और 1980 ई० में राँची विश्वविद्यालय राँची में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग की स्थापना हुई। जिससे प्रतिदिन नये-नये खोरठा कवि लेखक गायक एवं रचनाकारों का उदय होता चला गया और खोरठा भाषा साहित्य भी विकास की ओर निरंतर बढ़ने लगा। परिणामतः खोरठा भाषा साहित्य के तमाम साहित्य की विधाओं में शोध कार्य जारी है।

प्रकृति काव्य का अभिन्न अंग है। प्रत्येक युग के कवियों ने अपने काव्य में सामाजिक वातावरण, सांस्कृतिक वातावरण तथा लोक रूचि के अनुसार ही प्रकृति चित्रण किया है। सभी कालों के काव्यों में प्रकृति को अति संवेदनशील रूप से प्रस्तुत किया है। प्रकृति एवं मानव के बीच बहुत ही घनिष्ठ संबंध हैं क्योंकि मनुष्य का जन्म एवं पालन-पोषण प्रकृति के गोद में हुआ है इसलिए प्रकृति हमेशा मानव के सुख-दुःख में साथ रहती है। जिससे कवियों ने प्रकृति के रोचक एवं मार्मिक चित्रण से मानवीय भावनाओं के सभी पक्षों का चित्रण सफलतापूर्वक किया है।

कवि काव्यों में शब्दों का ही नहीं बल्कि भावनाओं को भी भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। सामान्य भाषा और काव्य की भाषा में भिन्नता पायी जाती है। काव्यों को सामान्य भाषा में नहीं लिखा जा सकता है क्योंकि काव्य भाषा संदर्भमूलक

होती है। परन्तु यह सत्य है कि सामान्य भाषा से जुड़कर ही काव्य भाषा को विकसित किया जा सकता है। काव्य भाषाओं से ही कवि में सृजनात्मक एवं कल्पना शक्ति में वृद्धि होती है।

खोरठा भाषा के काव्यों में क्रमिक विकास और प्रकृति के साथ उसके संबंध को इंगित करते है जिससे अधिकांश काव्यों में सर्वत्र प्रकृति को प्रतिबिम्बित किया गया है। खोरठा काव्यों में प्रकृति प्रदत पर्यावरण का चित्रण बहुत अधिक मिलता है प्राकृतिक पर्यावरण के माध्यम से ही सामाजिक परिवेश एवं संस्कृति को प्रदर्शित की गयी है खोरठा काव्यों में ग्रामीण जीवन की परिवेशों को दिखाया गया है। अतः खोरठा काव्यों में वनांचल की प्रकृति, वातावरण तथा जीवन आदि का चित्रण होता है। अपने तन मन पर प्रकृति के प्रभाव को उन्होंने लोकगीतों तथा काव्यों में वर्णित किया है।

खोरठा काव्यों में शब्द, शब्दशक्ति, शब्द अभिलक्षण, शब्द सौंदर्य आदि भरी हुयी है। इसलिएए काव्यों में जब जैसी आवश्यकता पड़ती है उसे प्रकृति के माध्यम से अलग-अलग शब्द शक्तियों के प्रयोग से कवियों ने कविताओं के कलात्मक सौंदर्य को बढ़ा दिया है। खोरठा काव्यों में अलंकार का प्रयोग आंसिक रूप से किया गया है। संस्कृत एवं हिन्दी आदि विकसित भाषाओं के आचार्यों ने अपने काव्यों या गीतों में विभिन्न प्रकार की अलंकारों का प्रयोग किये हैं। परन्तु खोरठा भाषा के रचनकारों या कवियों ने अपने गीतों की रचना इस प्रकार की जिससे स्वतः खोरठा काव्य अलंकार समाविष्ट हो गए। खोरठा काव्यों में अलंकार की योजना सरलता, स्वभाविकता, नवीनता और मौलिकता है।

खोरठा शिष्ट साहित्य में काव्य बिम्ब प्रकृति के साथ प्रस्तुत किया गया है। खोरठा काव्यों में संकेतों का प्रयोग बहुत अधिक हुआ है। प्रकृति प्रदत्त पर्यावरण पर विशेष रूप से आश्रित खोरठा काव्यों में विभिन्न प्राकृतिक पदार्थों, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, नदी-नाला तथा पहाड़-पर्वत आदि का प्रयोग प्रतीक के रूप में किया है। इन

प्रतिबिम्बों से मिलते-जुलते हैं। खोरठा काव्यों में हमेशा ही रस भरी रहती है। मानव जीवन के समस्त सुख-दुःख, आनन्द- उल्लास, कहानी एवं गीतों में है। शृंगार रस तो काव्यों एवं गीतों का प्राण है परन्तु करूणा शांत हास्य वीर आदि रसों का समन्वय भी मिलता है।

खोरठा काव्यों में प्रकृति के आलम्बन उद्‌दीपन, मानवीकरण, सौंदर्य, अलंकार, दर्शनिक तथा उपदेशक आदि विविध रूपों के अतिरिक्त खोरठा काव्यों में प्रकृति का वर्णन स्वतंत्र रूप से किया जाता है। विभिन्न परिस्थितियों एवं घटनाओं का उल्लेख भी सरल शब्दों में किया है जिसमें किसी भी प्रकार की कृत्रिमता नहीं होती है। प्रकृति में उपस्थित संसाधनों का वर्णन बिम्ब- प्रतिबिम्ब की सहायता से किया गया है जो बेहद ही सुशोभित है। खोरठा काव्यों में कल्पना एवं यथार्थ के साथ प्रकृति का नवीन रूप आंकित है। खोरठा साहित्य का निर्माण समुदाय से आरंभ होता है। जिसमें वह अपने अनुभव एवं प्रतिदिन क्रियाकलापों के आधार पर प्रकृति का प्रत्यक्ष वर्णन करता है। इसलिए अपने सामान्य ग्रामीण परिवेश, पहाड़-पर्वत, झरना, जंगलों आदि का ही प्रतिबिम्ब होता है। प्रकृति के आलम्बन और उद्‌दीपन रूप चित्रण में किसी भी उच्च कोटि के कवि के समरूप करने की क्षमता इनमें है। प्रकृति का मानवीकरण करने में भी इसकी सूझबूझ और कवित्व शक्ति का परिचय मिलता है। खोरठा काव्यों में बिम्बों और प्रतीकों की भी कमी नहीं है।

खोरठा काव्य पुस्तक - सोन्ध माटी, कादो फूल, खोरठा गद्‌य-पद्‌य संग्रह, तातल आर हेमाल तथा अन्य काव्य पुस्तकों में खोरठा कविताओं में प्रकृति का आलम्बन रूप है। इस प्रकार खोरठा काव्यों में आलम्बन के रूप में प्रकृति का ऐसा रूप प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। अधिकांश खोरठा काव्यों में प्रकृति आलम्बन के साथ ही उद्‌दीपन के रूप में प्रस्तुत हुए हैं। इस प्रकार के वर्णनों से प्रकृति में खोरठा काव्यों और उनके कवियों की पुरानी मैत्री झलकती है कि प्रकृति का न केवल मनुष्य से अपितु काव्य से भी गहन रिश्ता है। जिस तरह मानव के प्रत्येक काव्य व्यवहार में

प्रकृति प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी रहती है। उसी प्रकार काव्य से भी प्रकृति का गहरा संबंध है। प्रकृति काव्यों की शृंगारिक रूप में तो कभी भावों उद्दीपन के रूप में, तो कभी अभिव्यंजना में सहायक बनाकर प्रस्तुत होती है। प्रारंभ से ही प्रकृति किसी न किसी रूप में काव्य से जुड़ी रही है।

कवि का प्रेम, प्रकृति के प्रति अन्य लोगों के प्रेम से भिन्न होता है, क्योंकि कवि प्रकृति को हृदय की भावना से जोड़कर देखते है। कवि प्रकृति को चेतना मानता है, इसलिए कवि तथ्यों की अपेक्षा भावनाओं के संबंध पर बल देता है। वह वस्तु को यथार्थ रूप में चित्रण न करके हृदय पर पड़े हुए उनके प्रभाव का चित्रण करता है। कवि काव्यों में रचनाकारों ने अपनी काव्यों में प्रकृति चित्रण में वास्तविकता को दिखाया है। अधिकांश खोरठा काव्यों में हृदय के सरल भावों की अभिव्यक्ति में प्रकृति के मनोहर दृश्य सहायक हुए हैं। खोरठा भाषी के संस्कृति, जीवनशैली और भावनाओं में प्रकृति महत्व भी मिलते हैं। प्रकृति के पेड़-पौधे, नदी-झरनों, पहाड़ों-घाटियों, पशु-पक्षियों आदि से संबंधित अनगिनत शब्द काव्यों में मिलते हैं और काव्यों को प्राकृतिक सौंदर्य से भर देते हैं।

<u>शोध की प्रेरणा:</u>

मैं प्रारंभ से ही खोरठा परिवेश में रह रहा हूँ तथा इस भाषा का प्रयोग मैं मातृभाषा के रूप में किया हूँ। अलग झारखण्ड राज्य निर्माण के पश्चात् खोरठा भाषा को भी विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं में वैकल्पिक विषय के रूप में स्थान प्राप्त हुआ है। मुझे वर्ष 2017 में स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् प्रतियोगिता परीक्षाओं में शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ। इसी क्रम में खोरठा भाषा के काव्यों का अध्ययन करने का मौका मिला, जिससे मैं काफी प्रभावित हुआ। तत्पश्चात् स्नातकोत्तर की पढ़ाई के लिए मैं जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग से जुड़ा। पाठ्यक्रम में खोरठा साहित्य एवं इनके अन्य विधाओं का अध्ययन किया। जिससे

खोरठा काव्यों के बारे में अधिक जानने की इच्छा हुई तथा इसी कारण मुझे 'खोरठा काव्य में प्रकृति चित्रण' : एक अध्ययन पर शोध करने की प्रेरणा मिली। फलस्वरुप 'खोरठा काव्य में प्रकृति चित्रण' : एक अध्ययन को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने की इच्छा मुझमें उत्पन्न हुई।

<u>शोध की परिकल्पना:</u>

परिकल्पना शब्द 'परिकल्पना' दो शब्दों से मिलकर बना है। परि का अर्थ है 'चारों ओर' तथा कल्पना का अर्थ 'चिंतन' है। अर्थात् परिकल्पना से तात्पर्य किसी समस्या से संबंधित समस्त संभावित समाधान पर विचार करना है।

खोरठा साहित्य में विभिन्न विधाओं में अनेक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। खोरठा साहित्य के विभिन्न विधाओं पर शोध कार्य सम्पन्न हो चुके हैं तथा कुछ में जारी है। इसी क्रम में प्रस्तावित शोध कार्य 'खोरठा काव्य में प्रकृति चित्रण' : एक अध्ययन पर शोध कार्य की योजना मेरे मन में म॰ के पाठ्यक्रम के दौरान से चली आ रही थी। जिससे खोरठा काव्यों से मैं काफी प्रभावित था। जिसके कारण मैं खोरठा काव्य में प्रकृति चित्रण के ऊपर शोध कार्य प्रारंभ करना चाहता हूँ। जिससे खोरठा भाषा साहित्य में अभिरूचि के साथ-साथ ज्ञान की क्षमता एवं योग्यता का विकास होगा।

<u>शोध का उद्देश्य:</u>

किसी शोध कार्य का प्रारंभ करने से पूर्व शोध से संबंधित उद्देश्य निर्धारित की जाती है। इस शोध प्रारूप का निम्नांकित उद्देश्य है -

- खोरठा भाषा एवं साहित्य का गहन अध्ययन करना।
- खोरठा भाषा साहित्य के आने वाले शोधार्थियों के लि सूचना संकलन, संग्रहण एवं विश्लेषण करना।

- खोरठा के काव्यों का अध्ययन करना।
- खोरठा काव्य के प्रकृति चित्रण का अध्ययन करना।
- खोरठा काव्य एवं प्रकृति के बीच संबंधों का अध्ययन करना।
- खोरठा काव्य में झारखण्ड राज्य के प्रकृति-परिवेष का अध्ययन करना।
- खोरठा काव्य में भाषा शैली, बिम्ब, प्रतीक तथा उपमान का अध्ययन करना।

<u>शोध का महत्व:</u>

- निज भाषा प्रेम एवं अपनी संस्कृति के प्रति लोगों का रूझान बढ़ेगा तथा उनमें नई जागृति उत्पन्न होगा।
- इस शोध प्रबंध के प्रकाशित होने से खोरठा काव्यों का सम्मान बढ़ेगा।
- इस शोध के माध्यम से खोरठा काव्यों में प्रकृति का महत्व बतलाया जाएगा।
- इस शोध के माध्यम से खोरठा काव्यों में झारखण्ड राज्य के प्राकृतिक मनमोहक दृष्यों को वर्णन किया जाएगा।
- इस शोध के माध्यम से खोरठा काव्यों में झारखण्ड राज्य में उपलब्ध जंगली उत्पादों के महत्व एवं सौंदर्य को प्रदर्शित किया जागा।

<u>शोध विधि:</u>

प्रस्तावित शोध प्रबंध को पूर्ण करने हेतु निम्नांकित शोध विधियों का अनुसरण किया जागा -

1. साक्षात्कार विधि
2. अवलोकन विधि
3. अनुसूची विधि
4. व्यक्तिक अध्ययन विधि

5. विश्लेषणात्मक विधि

<u>शोध उपकरण:</u>

- टेप रिकॉर्डर
- वेबसाईट/इंटरनेट
- चित्र
- प्रश्नावली
- कैमरा
- कम्प्यूटर।

<u>साहित्य अवलोकन (पूर्व में किए गए शोध/आलोचना कार्यों का विवरण):</u>

प्रस्तावित शोध प्रबंध कदम नया शोध विषय है। अब तक इस पर कोई भी शोध कार्य नहीं किया गया है। परन्तु प्रस्तावित शोध विषय से संबंधित खोरठा काव्यों की अनेक पुस्तकें प्रकाषित हो चुके हैं। अब तक प्रकाषित शोध एवं उन पुस्तकों के द्वारा इस शोध विषय को सम्पन्न करने में मुझे आधार ग्रंथ के रूप में सहायता प्राप्त होगी।

<u>शोध का समाज में प्रभाव:</u>

प्रस्तुत शोध के प्रकाषित होने से समाज पर इसका सीधा एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ेगाए जो निम्नलिखित है -

1. खोरठा काव्य में प्रकृति चित्रण से लोगों में प्रकृति के प्रति झुकाव बढ़ेगा।
2. खोरठा काव्यों के माध्यम से लोगों के समक्ष प्राकृतिक सौंदर्य को दर्शाया जा सकता है।
3. काव्यों के माध्यम से लोग प्रकृति संरक्षण के लिए जागरूक होंगे।

4. झारखण्ड राज्य के जंगलों में उपस्थित विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों के गुण एवं महत्व को समझ पायेंगे।

5. झारखण्ड राज्य के गोद में बसे नदियों, जलप्रपातों, पहाड़ों, वादियों जैसे अन्य प्राकृतिक सौंदर्य की जानकारी उपलब्ध हो सकेगी।

6. यह शोध प्रबंध प्रकाष में आने के पश्चात् खोरठा काव्य के माध्यम से झारखण्ड के सौंदर्य को बढ़ावा मिलेगा।

<u>शोध कार्य का रूपरेखा -</u>

- प्रस्तावना
- शोध की प्रेरणा
- शोध की परिकल्पना
- शोध का उद्देष्य
- शोध का महत्व
- शोध विधि
- शोध उपकरण
- साहित्य अवलोकन (पूर्व में किए गए शोध/आलोचना कार्यों का विवरण)
- शोध का समाज में प्रभाव

<u>प्रस्तावित अध्यायीकरण:</u>

<u>प्रथम अध्याय</u> खोरठा काव्य का सामान्य परिचय

क. खोरठा काव्य का स्वरुप

ख. खोरठा काव्य का वर्गीकरण

ग. खोरठा काव्य की विशेषताएँ

द्वितीय अध्याय खोरठा काव्य में प्रकृति का परिचय

क. खोरठा काव्य में प्रकृति का स्वरुप

ख. खोरठा काव्य में प्रकृति और संस्कृति

ग. खोरठा काव्य में प्रकृति और मानव जीवन

तृतीय अध्याय खोरठा काव्य में भाव पक्ष के रूप में प्रकृति चित्रण

क. खोरठा काव्य में भाव पक्ष का परिचय एवं वर्गीकरण

ख. खोरठा काव्य में रस के रूप में प्रकृति चित्रण

ग. खोरठा काव्य में रसों के वर्गीकरण के रूप में प्रकृति चित्रण

चतुर्थ अध्याय खोरठा काव्य में कला पक्ष के रूप में प्रकृति चित्रण

क. खोरठा काव्य में कला का परिचय एवं वर्गीकरण

ख. खोरठा काव्य में छंद के रूप में प्रकृति चित्रण

ग. खोरठा काव्य में अलंकार के रूप में प्रकृति चित्रण

घ. खोरठा काव्य में बिम्ब एवं चित्र के रूप में प्रकृति चित्रण

ङ. खोरठा काव्य में प्रतीक के रूप में प्रकृति चित्रण

पंचम अध्याय खोरठा काव्य में आलम्बन के रूप में प्रकृति चित्रण

क. खोरठा काव्य में आलम्बन का परिचय

ख. खोरठा काव्य में आलम्बन के प्रकार

ग. खोरठा काव्य में आलम्बन के रूप में प्रकृति चित्रण

षष्ठ अध्याय खोरठा काव्य में उद्दीपन के रूप में प्रकृति चित्रण

क. खोरठा काव्य में उद्दीपन का परिचय

ख. खोरठा काव्य में उद्दीपन के प्रकार

ग. खोरठा काव्य में उद्दीपन के रूप में प्रकृति चित्रण

<u>सप्तम अध्याय</u> खोरठा गीतों में प्रकृति-चित्रण की परंपरा

क. खोरठा गीतों का वैशिष्ट्य

ख. खोरठा के संस्कार गीतों में प्रकृति

ग. खोरठा ऋतु गीतों में प्रकृति

घ. खोरठा के अन्य गीतों में प्रकृति

निष्कर्ष

परिषिष्टः क. आधार ग्रंथ सूची

ख. सहायक ग्रंथ सूची

ग. पत्र-पत्रिका की सूची

घ. साक्षात्कार सूची

ङ. चित्रावली।

<u>नोट</u>:- प्रस्तावित शोध प्रारूप में आवश्यकतानुसार आंसिक परिवर्तन किया जा सकता है।

<u>शोध निर्देशक</u>
डॉ॰ अजीत मुण्डा
सहायक प्राध्यापक
मुण्डारी विभाग
रामलखन सिंह यादव महाविद्यालय राँची
राँची विश्वविद्यालय राँची।

<u>शोधार्थी</u>
बबलू कुमार महतो
यू॰जी॰सी॰ नेट/जे॰आर॰फ॰
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग,
राँची विष्वविद्यालय, राँची।

क. आधार ग्रंथों की सूची:-

क्रम सं॰	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक	वर्ष
1.	ओहदार, डॉ॰ वी॰ एन॰	खोरठा भाषा और साहित्य (उद्भव एवं विकास)	खोरठा भाषा साहित्य अकादमी, रामगढ़	2007
2.	कुमार, डॉ॰ बिनोद	सोन्ध माटी	जनजातीय भाषा अकादमी, राँची, बिहार, सरकार	1990
3.	गणपति, धनपत महतो	कादो फूल	खोरठा ढाकी छेतर कमिटि, कोठार, रामगढ़	1986
4.	गोस्वामी, डॉ॰ महेन्द्रनाथ	ओंगठा (खण्ड काव्य)	खोरठा कमिटि बोकारो	1994
5.	झा, डॉ॰ ए॰ के॰	छंद रस अलंकार	खोरठा ढाकी छेतर कमिटि, कोठार, रामगढ़	
6.	झा, डॉ॰ ए॰ के॰	खोरठा साहित सदानिक बेयाकरण	खोरठा ढाकी छेतर कमिटि, कोठार, रामगढ़	2010, 2018
7.	झा, डॉ॰ ए॰ के॰	खोरठा गद्य पद्य संग्रह	बोकारो खोरठा कमिटि बोकारो	1989
8.	झा, डॉ॰ ए॰ के॰	कविता पुराण	पुष्पा प्रेस, यदुवेष नगर, चास, बोकारो,	1994
9.	पानुरी, श्रीनिवास	आँखिक गीत	श्री नारायण महतो, धनबाद	2011
10.	प्रमाणिक शिवनाथ	तातल आर हेमाल	खोरठा साहित्य कुटीर, बैदमारा	1998
11.	प्रमाणिक शिवनाथ	रूसल पुटुस	बोकारो खोरठा कमिटी, बोकारो	1985
12.	प्रभाकर, गजाधर महतो	पुटुस फूल	खोरठा ढाकी छेतर कमिटी, बोकारो	1988
13.	बंशी, बंशीलाल	डींड़ाक डोआनी	बोकारो खोरठा समिति,	1992

			बोकारो	
14.	शशि, कुमारी	जिनगिक डहर	यादव कम्प्यूटर, जीवजीगंज ग्वालियर, म0प्र0	2022

ख. सहायक ग्रंथों की सूची:-

क्रम सं॰	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक	वर्ष
1.	केशरी, डॉ॰ विसेश्वर	साहित्य के तत्व और आयाम	कमल प्रकाशन, राँची	1971
2.	कुमारी, गुलांचो	कविता हामर सोक नाञ (खोरठा कविता संग्रह)	ब्राइट प्रकाशन, हरियाणा	2023
3.	झा, डॉ॰ .के॰	दु डाइर जिरहुल फूल	खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद्, रामगढ़	तृतीय संस्करण 2017
4.	'प्रभाकर' डॉ॰ गजाधर महतो	आब ना रहा पटाइल (कविता संग्रह)	ब्राइट पब्लिकेशन, हरियाणा	2024
5.	'प्रभाकर' डॉ॰ गजाधर महतो	केंवराक गमक (खोरठा कविताक झोंपा)	सफल प्रकाशन, राँची	2023
6.	महतो, संतोष कुमार	एक मउनी फूल	रामधन प्रकाशन, गांगजोरी, बोकारो	1988
7.	महतो, संतोष कुमार	एक पथिया डोंगल महुआ	रामधन प्रकाशन, गंगजोरी, बोकारो	2005
8.	मिश्र, भागीरथ	काव्यशास्त्र	वि विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	1966
9.	शर्मा, देवेन्द्र नाथ	काव्य के तत्व	लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद	1994
10.	सिंह, डॉ॰ केदारनाथ	आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब प्रधान	भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली	1971

ग. पत्र-पत्रिकाओं की सूची:-

1. इंजोर - धनंजय प्रसाद, मधुपुर, देवघर, 1997.

2. करील - डॉ॰ बी॰ एन॰ ओहदार, ओरमांझी, राँची, 2009.

3. खोरठा - श्रीनिवास पानुरी, बरवाअड्डा धनबाद, 1970.

4. तितकी - विश्वनाथ दसौंधी राज, कतरासगढ़, धनबाद, 1977.78.

5. परास फूल - महेन्द्र प्रबुद्ध, धनबाद, 2009.

6. मातृभाषा - श्रीनिवास पानुरी, बरवाअड्डा, धनबाद, 1975.

7. लुआठी - गिरिधारी गोस्वामी, आकाश खुंटी, बालीडीह, बोकारो, 1999.

8. सहिया - अनिल कुमार विस्थापित, बोकारो, 2002.

9. सहिदान - फाल्गुनी मटीक कुशवाहा, गिरिडीह, 2002.